I
शामिल

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल वर्ष 2018 24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
विशिष्ट हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

0552037

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	8	1	6	3	2	8	7	3

में

दो	आठ	एक	छः	तीन	दो	आठ	सात	तीन

एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में ✗ शब्दों में ✗

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 02

ग :– परीक्षा का दिनांक 01 | 03 | 2018

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्रमांक 162001

हायर सेकेंडरी परीक्षा

केन्द्राध्यक्ष
वी.टी.पी. उ.मा. विद्यालय
शिवपुरी (म.प्र.)

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Smt Rani Nadoan (signature) 01.03.18	(signature)

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
M.K. Rathore (Lecturer) Govt. ... Shahpur V.No. 7700 Mob. 9425663859	Smt. Malti Choudhary (V.A) Govt.H.S.S. Naniya Reg No. 7595 Mob.9425663010 W.R. Gadve (V.A.) Govt.H.S.S. Gohgud V.No. 7653 Mob. 9425668670

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल ... प्राप्त

2

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक

कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCAT

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक- 1

1. उत्तर - कृष्ण को लेने

2. उत्तर - भय में

3. उत्तर - लालमणि

4. उत्तर - निराला

5. उत्तर - 31

प्रश्न क्रमांक-2

(अ) उत्तर - धरती

(ब) उत्तर - क्षणभंगुर

(स) उत्तर - अरबवें

(द) उत्तर - मातृभाषा

(इ) उत्तर - प्रबन्ध काव्य

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 3

(1) उत्तर - असत्य

(2) उत्तर - असत्य

(3) उत्तर - सत्य

(4) उत्तर - असत्य

(5) उत्तर - सत्य

B S E

प्रश्न क्रमांक - 4

(अ) उत्तर - दशमुख रावण ।

(ब) उत्तर - शांत वातावरण ।

(स) उत्तर - राजरानी देवी ।

(द) उत्तर - तीन ।

(ई) उत्तर - छप्पय छंद ।

P.T.O.

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक-5

स्तम्भ 'क'		स्तम्भ 'ख'
(अ) मीरा के आराध्य	-	श्रीकृष्ण
(ब) वापसी	-	उषा प्रियंवदा
(स) कंस आतंकित था	-	देवकी का व्योमातीत रूप
(द) गेय मुक्तक	-	मीरा पदावली
(ई) माता-पिता	-	द्वन्द्व समास

प्रश्न क्रमांक-6

(अथवा)

घनानंद सुजान को उलाहना देते हुए कहते हैं कि हे सुजान पहले तो तुमने मुझे प्रेम से अपना लिया अब स्नेह को तोड़कर बीच मझधार में बिना आधार के मत छोड़ो। चातक की आन से कुछ सीखकर मुझे बेसहारा मत छोड़िए। प्रेम का रस पिलाने की आशा बँधाकर विश्वास में बिष मत घोलिए।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 5 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 7

पल्लव वसना उस सूखी सी डाल को कहा गया है जो बसन्त के आने पर पल्लवों से वस्त्र धारिणी बनेगी। यह उस शैलपुत्री के समान है जिसने शिव को पति रूप मे प्राप्त करने के लिए पत्ते भी खाना छोड दिए थे और अत्यन्त कमजोर हो गयी है अपनी तपस्या के बाद वह शिव का वरण करेगी तथा यह सूखी डाल पल्लवों से वस्त्र धारिणी बनेगी।

प्रश्न क्रमांक - 8

'अरी सुहागिन' सम्बोधन वैसे तो नव विवाहित स्त्री के लिए किया गया है, परन्तु प्रकृति की ओर भी संकेत किया गया है।

प्रश्न क्रमांक - 9

माँ सरस्वती की वंदना देवगण, ऋषिगण, तपस्वी, भूत-भविष्य, वर्तमान को जानने वाले, उनके पति ब्रह्मा, पुत्र शिव तथा नाति कार्तिकेय आदि करते हैं।

प्रश्न क्रमांक - 10
(अथवा)

जब युवक साहस के साथ अपने मार्ग पर आगे बढ़ेगा तो विघ्न, बाधाएँ भी उसका मार्ग छोड देती है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक-11
(अथवा)

घर खुलते ही लेखक को ऐसा लगने लगा मानो घर खुलते ही उसके अंदर पुरानी स्मृतियाँ एवं यादें खुलती जा रही है। लेखक अपने घर पर कई सालों बाद लौटकर आता है तथा पुरानी स्मृतियों को याद करता है।

प्रश्न क्रमांक-12
(अथवा)

गजाधर बाबू रेलवे की नौकरी से रिटायर हुए थे। उन्होंने सफलतापूर्वक अपनी 35 वर्ष की रेलवे की नौकरी पूर्ण कर ली थी।

प्रश्न क्रमांक-13

शरद जोशी के अनुसार अच्छे अध्यक्ष की दो विशेषताएँ निम्न है-

(1) अच्छे अध्यक्ष रेडीमेड होते है वे सभी विषयो पर एक ही अंदाज में एक ही बात करते है।

(2) अच्छा अध्यक्ष देर से आता है तथा अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठकर विभिन्न मुख-मुद्राएँ बनाता है।

B
S
F

...EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOF... ...CATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAP... ...ATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYA...

न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 14

उत्तराखण्ड के प्राकृतिक दृश्यों के सामने न तो कश्मीर के दृश्य ठहरते है और न ही स्विट्जरलैण्ड के। कल-कल करती स्वच्छ जल समेटी नदियाँ, वर्षभर बर्फ से ढके रहने वाले पर्वत, घाटियों की मनोहर वादियाँ, ऊँचे-ऊँचे देवदारू व चीड़ के वृक्ष, चारों ओर फैली हरियाली, गगनचुम्बी ऊँचाई से गिरते झरने सब कुछ ऐसा लगता है मानो किसी दूसरे लोक में आ गए है। इस प्रकार उत्तराखण्ड अपने मनोरम वातावरण के द्वारा लोगों को आकर्षित करता है।

प्रश्न क्रमांक - 15
(अथवा)

(i) अंधेर मचाना :- "खुला अन्याय करना"

प्रयोग आजकल बाजार में कालाबाजारियों ने अंधेर मचा रखी है।

(ii) पलके बिछाना :- "आतुरता से प्रतीक्षा करना"

प्रयोग :- रमेश के विदेश से वापस घर लौटने पर उसकी माँ पलकें बिछाये बैठी थी।

P.T.O.

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक-16

हास्य रस :- सहृदय के हृदय में स्थित हास नामक स्थायी भाव का संयोग जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से हो जाता है तो वहाँ हास्य रस होता है।

अथवा

किसी व्यक्ति की विचित्र वेश-भूषा आदि को देखकर हँसी आ जाए वहाँ हास्य रस होता है।

उदाहरण :- फादर ने बनवा दिए तीन कोट छः पेंट।
बेटा मेरा बन गया कॉलिज स्टूडेण्ट।।

B

E

प्रश्न क्रमांक-17
(अथवा)

गणेश शंकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्न है -

(i) साधारण कद-काठी एवं पहनावा :- गणेश शंकर विद्यार्थी साधारण कद के दुबले पतले युवा थे। वे अक्सर ज्यादातर धोती तथा कुर्ता पहना करते है।

(ii) गंभीर विचारधारा :- गणेशशंकर विद्यार्थी का व्यक्तित्व अत्यन्त गंभीर था। वे किसी भी समस्या के समाधान के लिए गंभीर होकर सोचते थे।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(iii) कुशल राजनीतिज्ञ व साहित्यकार :-

गणेश शंकर विद्यार्थी कानपुर नगर के राजनैतिक जीवन के प्राण थे। उन्होंने एक बार प्रभावशाली व धनी पूँजीपति को करारी शिकस्त दी थी।

वे कुशल साहित्यकार भी थे। भारत के प्रमुख साहित्यकारों में उनका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है।

प्रश्न क्रमांक -18

(अथवा)

राजभाषा :- राजभाषा सरकारी कामकाज की भाषा होती है। अँग्रेजी में इसे 'ऑफिशियल लैंग्वेज' कहा जाता है। भारत का संविधान बनाते समय हिन्दी को राजभाषा माना। आज भी सात राज्यों में हिन्दी राजभाषा है।

जैसे - मध्यप्रदेश की राजभाषा हिन्दी है।

प्रत्येक राज्य की अपनी अलग राजभाषा हो सकती है।

राजभाषा की विशेषताएँ निम्न हैं :-

(i) सभी कार्यों के निर्णय, शिक्षा का माध्यम, रेडियो आदि पर कार्यक्रम का प्रसारण राजभाषा में ही किया जाता है।

(ii) सभी शासकीय कार्य राजभाषा में किए जाते हैं। किसी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिलने से उसका महत्व बढ़ जाता है।

10 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 10 के अंक = कुल अंक

SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 19

रोला छंद :-

रोला छंद एक मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते है। इसके प्रत्येक चरण में 11-13 के विराम से कुल 24 मात्राऐं होती हैं।

उदा०

जहाँ स्वतंत्र विचार न बदले मन में मुख में,
जहाँ न बाधक बने सबल निबलों के सुख में।

सबको जहाँ समान निजोन्नति का अवसर हो,
शांतिदायिनी निशा हर्ष सूचक वासर हो।

प्रश्न क्रमांक - 20

रिपोर्ताज :-

रिपोर्ताज फ्रेंच भाषा का शब्द है। जिसका अंग्रेजी भाषा के 'रिपोर्ट' शब्द से गहरा सम्बन्ध है। रिपोर्ट समाचार के लिखी जाती है जिसमें किसी घटना का वास्तविक चित्रण किया जाता है। आँखों देखी व कानों सुनी घटना पर ही रिपोर्ताज लिखी जा सकी है।

रिपोर्ताज का प्रचलन द्वितीय विश्व के समय युद्ध की विभिषिका का वर्णन करने के लिए किया गया था। रिपोर्ताज लेखक कभी कलाकार बनता है तो कभी पत्रकार।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उदाहरण - धर्मवीर 'भारती द्वारा' लिखित 'युद्धयात्रा' एक रिपोर्ताज है।

रिपोर्ताज की प्रमुख विशेषताएँ निम्न है-

(i) रिपोर्ताज में किसी घटना का वास्तविक व सजीव चित्रण किया जाता है।

(ii) घटना का पूर्ण विश्लेषण तथा विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

(iii) रिपोर्ताज में रेखाचित्र, निबंध व कहानी आदि की विशेषताएँ समाहित रहती है।

प्रश्न क्रमांक - 21

प्रयोगवाद के जनक 'अज्ञेय' को माना जाता है।

प्रयोगवाद की दो विशेषताएँ निम्न है -

(i) नवीन उपमानो का प्रयोग : -
इस काल के कवियों ने नवीन उपमानों का प्रयोग किया है। वे मानते है कि पुराने उपमान अब बासी पड़ गए है।

(ii) प्रेम भावनाओं का खुला चित्रण : -
इस काल के कवियो ने प्रेम-भावनाओं का अत्यन्त खुला चित्रण किया है तथा काव्य में कहीं- कहीं अश्लीलता का भी समावेश है।

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रयोगवादी कवि	रचनाएँ
(i) अज्ञेय	हरी घास पर क्षण भर
(ii) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	चाँद का मुँह टेढ़ा है

प्रश्न क्रमांक - 22

सूरदास

(अ) दो रचनाएँ :-

(i) सूरसागर
(ii) साहित्यलहरी

(ब) भावपक्ष :-

(i) भक्तिभावना :- कृष्णलीलाओं के अमर गायक सूरदास जी के काव्य में भक्तिभावना की प्रधानता है। काव्य ही उनका भगवत् भजन है। उन्होंने अपने आराध्य की सभी बाललीलाओं तथा प्रेमलीलाओं का वर्णन किया है।

(ii) रससिद्धता :- सूरदास जी रससिद्ध कवि है। इनके काव्य में शांत, श्रृंगार व वात्सल्य की त्रिवेणी प्रवाहित है 'श्यामसुन्दर दास' ने इन्हें 'रससिद्ध कवि' कहकर पुकारा है।

BSE

प्रश्न क्र.

(iii) सहृदयता व भावुकता :-
सूरदास जी ने मानव मन के सभी भावों का वर्णन किया है। माता यशोदा तथा गोपियों की संयोग व वियोग का वर्णन किया है।

(iv) श्रृंगारिता :-
इन्होंने गोपियों की संयोगकाल की उनमना तथा वियोग की मार्मिक वेदना का वर्णन किया है।
आचार्य रामचन्द्र ने लिखा है -
" श्रृंगार का रस राजत्व हिन्दी में यदि कहीं देखने को मिलता है तो केवल सूर में।"

(v) वात्सल्य वर्णन :-
सूरदास का वात्सल्य वर्णन अद्वितीय है। वात्सल्य का कौना - कौना झांका है।

2. कलापक्ष :-
(i) भाषा :-
सूरदास जी ने सुललित माधुर्यमयी ब्रजभाषा में काव्य रचना की है। ब्रजभाषा को सुललित काव्य बनाने का श्रेय सूरदास को है।

(ii) अलंकार :-
सभी अलंकारों का सहज- स्वाभाविक प्रयोग है। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा है - " अलंकारशास्त्रों तो सूरदास के द्वारा वात्सल्य वर्णन शुरु करते ही हाथ जोड़कर पीछे पड़ जाता है। उपमानों की बाढ़ आ जाती है। रुपकों की वर्षा होने लगती है।"

14

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

(ii) गेयमुक्तक शैली व छंद :-
इन्होंने गेय मुक्तक शैली को अपनाया है तथा इनका छंद विधान भी अनुपम है।

3. साहित्य में स्थान :-
भक्तिकाल की सगुण कृष्णभक्तिधारा के प्रतिनिधी कवि है। श्रृंगार तथा वात्सल्य के आचार्य माने जाते है। सूर वास्तव में हिन्दी साहित्यकाश के सूर्य है। भावपक्ष व कलापक्ष की दृष्टि से कोई कवि इनकी तुलना नहीं कर सकता है।
किसी ने ठीक ही कहा है-
" सूर-सूर तुलसी शशि उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकाश।"

प्रश्न क्रमांक - 23

रामनारायण उपाध्याय

(अ) दो रचनाएँ :-
(i) मामूली आदमी
(ii) आओ अब घर चलें

(ब) भाषा :-
पंडित जी की भाषा सहज, सरल व व्यावहारिक है। खडी बोली में सहजता है। देशज व विदेशी शब्दों का प्रयोग है। कहीं-कहीं आंचलिक भाषाओं के शब्द भी आ गए हैं। भाषा का प्रवाह सहज है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

कहावतों व मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सहजता व चमत्कार उत्पन्न हो गया है। इनका शब्द चयन उच्चकोटि का है। एक-एक शब्द बड़ी सोच-समझकर लिखा गया है।

शैली :- उपाध्याय जी की प्रमुख शैली निम्न है-

(i) भावात्मक शैली :- उपाध्याय जी जहाँ भावों में खो जाते है वहाँ इनकी इस शैली के दर्शन होते है।

(ii) विचारात्मक शैली :- उपाध्याय जी के निबंधो में कोरी भावुकता ही नहीं विचारात्मकता भी है। गंभीर से गंभीर विषय को भी विचारों के माध्यम से व्यक्त कर देते है।

(iii) व्यंग्यात्मक शैली :- इस शैली के दर्शन इनके निबंधों में कहीं-कहीं देखने को मिल जाते है।

(iv) वर्णनात्मक शैली :- अपनी बात को सही प्रकार से समझाने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान :- रामनारायण जी का हिन्दी साहित्य में प्रमुख स्थान है। ये ग्रामीण धरती से जुड़े रहे तथा इन्होंने ग्रामीण जीवन का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है इन्हें भारत सरकार द्वारा कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। ये विचारक, निबंधकार तथा समालोचक के रूप में सदैव स्मरण किए जाएँगे।

B
S
E

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र. प्रश्न क्रमांक - २४

संकेत- किसी आती हुई _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ . भय कहते है।

संदर्भ :-
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'भय' नामक निबंध से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य जी 'रामचन्द्र शुक्ल' है।

प्रसंग :-
प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भय मनोविकार का अर्थ समझाया है।

व्याख्या :-
रामचन्द्र शुक्ल कहते है कि भय का शाब्दिक अर्थ है- 'डर'। डर हृदय में उत्पन्न एक मनोभाव है। जिसमें भविष्य में आने वाली किसी समस्या के प्रति चिंता का भाव होता है। भय के कारण मन में एक आवेगपूर्ण मनोभाव पैदा हो जाता है जो अधिक समय तक बना रहता है। अतः दुःख या आपत्ति की कल्पना ही भय है।

विशेष :-
(i) भय मनोविकार का अर्थ बताया है।

(ii) भाषा मे संस्कृत शब्दों की प्रधानता है।

(iii) विचारात्मक शैली है।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 17 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 25

संकेत - कबीरा संगत - - - - - - - - - - - - चन्दन होय।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के नीतिकाव्य के 'अमृतवाणी' नामक शीर्षक से अवतरित है। इसके रचियता कबीरदास जी है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में कबीरदास जी ने सत्संगति के महत्व को प्रतिपादित किया है।

व्याख्या :-

कबीरदास जी कहते है कि संसार में सत्संगति के महत्व को तो वही व्यक्ति जान सकता है जिन्होंने साधु-सज्जनों की संगति की है। कबीरदास जी उदाहरण देते हुए कहते है जैसे चन्दन के समीप के सभी वृक्ष चंदन के कारण सुगन्धित हो जाते है परन्तु बॉस अपने गुण के कारण कठोर ही बना रहता है वह सुगन्धित नही हो पाता है।

काव्यसौन्दर्य :-

(i) सज्जनों की संगति करने को कहा है।

(ii) भाषा सधुक्कड़ी है।

(iii) अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 26

(क)

उत्तर मित्रता का महत्व

(ख)

उत्तर- समाज से अलग होकर मनुष्य की कल्पना नही की जा सकती है।

(ग)

उत्तर- मित्र एक सखा, गुरु, तथा माता के स्थानों की पूर्ति करता है।

प्रश्न क्रमांक - 27
(अथवा)

BSE

योग पूर्व पृष्ठ पृ क

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

सेवा में,

जिलाधिकारी महोदय,

शिवपुरी (म॰प्र॰) ।

विषय : ध्वनि विस्तारक यंत्र को बजाने पर प्रतिबंध लगाने हेतु ।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि हमारी माध्यमिक शिक्षामण्डल की परीक्षाओ का समय निकट है तथा हम सभी विद्यार्थी अपने- अपने अध्ययन में व्यस्त है, परन्तु ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है तथा देर रात तक तेज आवाज मे गाने बजाए जाते है। जिससे हमारे अध्ययन मे व्यवधान उत्पन्न हो रहा है तथा शांति भंग हो चुकी है।

अतः श्रीमान् जी से निवेदन है कि वे अतिशीघ्र परीक्षाकाल मे छात्रों के भविष्य को ध्यान मे रखते हुए ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाएँ । आपकी महती कृपा होगी।

सधन्यवाद

दिनांक

01/03/18

भवदीय

समस्त छात्र

52, शिव कॉलोनी

शिवपुरी

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 28

(अ)

रूप रेखा -

(i) प्रस्तावना
(ii) प्रदूषण से आशय
(iii) प्रदूषण के प्रकार
(iii) वर्तमान जीवन और प्रदूषण
(iv) प्रदूषण की समस्या के समाधान
(v) उपसंहार

"मानवता पर बढ़ रहा सतत् प्रदूषण भार,
मनुज अचेतन हो रहा कैसे हो उद्धार।"

1 प्रस्तावना :-

विज्ञान के प्रगति ने जहाँ मानव जाति को अनेक वरदान दिए है उनमें ही कुछ अभिशाप भी है। इन अभिशापों में से एक है "प्रदूषण"।

प्रदूषण की इस समस्या ने पिछले कई वर्षों में इतना उग्र रूप धारण कर लिया है कि इसके कारण आज वैज्ञानिक तथा विचारक गहरी चिंता में है। वैज्ञानिकों का मत है कि यदि प्रदूषण की इस समस्या से शीघ्र ही निदान न पाया गया तो यह सम्पूर्ण मानव जाति के लिए खतरा बन जाएगा।

प्रश्न क्र.

मनुष्य ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रकृति का शोषण किया तथा प्रकृति को महत्वपूर्ण पद से हटाकर आज अपनी दासी बना लिया है। जिससे आज विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हुई है। जिनका निदान पाना जरुरी है।

2 प्रदूषण का आशय :-

प्रदूषण शब्द से आशय है- 'दोष उत्पन्न होना' इस आधार पर हम इसे यों समझ सकते है कि जल, वायु तथा मृदा आदि के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों में कोई भी अवांछनीय परिवर्तन जिससे उसकी शुद्धता में गिरावट आदि है पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। आज पर्वत, नदियाँ, आकाश आदि सभी प्रदूषित है जो मानव तथा जीव जन्तुओं के लिए हानिकारक है।

3. प्रदूषण के प्रकार :-

प्रदूषण के वैसे तो कई प्रकार है परन्तु प्रमुख प्रदूषण निम्न है-

(i) वायु प्रदूषण :-

हमारी पृथ्वी चारो ओर से वायु की एक मोटी परत से ढकी है जो ऊपर जाने पर क्रमशः पतली होती गई है। वायु विभिन्न गैसों का मिश्रण है। जिसमें सभी गैसों का आपसी अनुपात निश्चित है। पृथ्वी पर मनुष्य ऑक्सीजन ग्रहण करता है तथा कार्बनडाई ऑक्साइड गैस को छोड़ता है यह गैस पेड़-पौधों द्वारा ग्रहण कर ली जाती है। इस प्रकार इनका संतुलन बना रहता है परन्तु किन्हीं भी कारणों से जब कार्बनडाई ऑक्साइड जैसी हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है तो यह वायु प्रदूषण का कारण

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

बनती है।
मनुष्य के क्रियाकलापों से पृथ्वी का तापमान बढ़ा है। विषैली हवा में साँस लेने से दमा, कैंसर आदि रोग हो जाते है।

(ii) जल प्रदूषण:- जल में विभिन्न रासायनिक व जैविक पदार्थ होते है। जल में हानिकारक तत्वों की मात्रा में वृद्धि जल प्रदूषण का कारण बनती है।
जल प्रदूषण की समस्या आज बढ़ती ही जा रही है। मनुष्य उद्योगों व कारखानों से निकले दूषित जल को नदियों में बहा देता है जिससे वह जल प्रदूषित हो जाता है। प्रदूषित जल के सेवन से हैजा, दस्त व महामारी जैसे रोग फैलते है।

" जल से जीवन जल ही जीवन जल जीवन का दाता है।
जल संरक्षण करले मानव जल ही भविष्य निर्माता है"

(iii) मृदा प्रदूषण:- मिट्टी के भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणों में परिवर्तन जिससे उसकी शुद्धता में गिरावट आती है मृदा प्रदूषण कहलाता है। पेड़-पौधों को कीटों से बचाने के लिए डी.डी.टी. जैसे पदार्थों का प्रयोग हो रहा है जिससे मृदा प्रदूषित हुई है। उत्पादकता में कमी आई है।

" आओ मिलकर कसम ये खाएँ,
प्रदूषण को दूर भगाएँ।"

BSE

ध्वनि प्रदूषण:-

कोई भी अवांछनीय ध्वनि जो मनुष्य के क्रियाकलाप में विघ्न उत्पन्न करे शोर कहलाती है। ध्वनि प्रदूषण एक अदृश्य प्रदूषण है जिससे मनुष्य में मानसिक रोग, हृदयघात आदि बढ़े है।

मोटर वाहन, गाड़ियों आदि के कारण ध्वनि प्रदूषण फैलता है।

"प्रदूषण से करनी रक्षा तो वृक्षों की करें रक्षा।"

वर्तमान जीवन और प्रदूषण:-

वर्तमान मे प्रदूषण ने भयंकर रूप धारण कर लिया है। कारखानों में चिमनियों के धुँए से वायु प्रदूषण बढ़ा है। वैज्ञानिकों का मत है कि यदि इसी तरह प्रदूषण बढ़ा तो कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा चार गुनी हो जाएगी तथा पृथ्वी का ताप चार गुना बढ़ जाएगा। अब तक लगभग 1200 परमाणु विस्फोट किए जा चुके है जिससे यह पता लगाना मुश्किल हो रहा है कि कितना प्रदूषण हुआ है, कितना हो रहा है और कितना होगा। कहने का तात्पर्य यह है आज प्रदूषण अपनी चरमसीमा तक पहुँच गया है।

आज हमें आवश्यकता है अधिक से अधिक वृक्ष लगाएँ क्योंकि -

"वृक्ष धरा के भूषण है, करते दूर प्रदूषण है।"

"बंजर धरती करे पुकार बच्चे कम और वृक्ष हजार।"

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

5. प्रदूषण की समस्या से निदान :-

आज प्रदूषण एक देश ही नही बल्कि मानव जाति के लिए खतरा बन चुका है। हमें इसे रोकने के लिए प्रदूषित जल को शोधन के बाद छोड़ना चाहिए, कारखानों में ऊँची चिमनियों का प्रयोग करना चाहिए। ध्वनि विस्तारक यंत्रों में ध्वनि नियंत्रक यंत्रों का प्रयोग करना चाहिए। अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए क्योंकि ये प्रदूषण को रोकते हैं।

★ "जैसा करोगे वैसा भरोगे, करोगे प्रदूषण तो बेकार मौत मरोगे।"

6. उपसंहार :- आज प्रदूषण के प्रति सभी सजग हो गए हैं। हम सभी को मिल जुल कर कार्य करना चाहिए तथा प्रदूषण को फैलाने वाले पदार्थों का कम से कम उपयोग करना चाहिए। व्यक्ति, समाज व सरकार सभी को एक साथ कदम बढ़ाना है। ए अधिक वृक्षों को लगाना चाहिए तथा प्रकृति को हरा-भरा बनाना चाहिए। एवं प्रदूषण के विरुद्ध ठोस कदम उठाना चाहिए वास्तविकता तो यह है -

★ "गफलत में डूबा मनुज नही जागेगा।
जल वायु प्रदूषण भूत नही भागेगा।"

उत्तर (ब) दीपावली

(i) प्रस्तावना
(ii) त्योहार मनाने का कारण
(iii) त्योहार की तैयारियाँ
(iv) दीपावली का त्योहार
(v) त्योहार का महत्व
(vi) उपसंहार

B S E